NOTES :

~~[illegible]~~ (1) ~~[illegible]~~ 24/11/22

AUGUST • 04

32nd Week • 216 Day

MONDAY •

कविता - सामान्य -
B.Sc. I
B.A. Part I — डॉ० अर्चना कुमारी
Hindi ~~[illegible]~~ रचना — एसोसिएट प्रोफेसर
~~[illegible]~~ — हिंदी विभाग,
~~[illegible]~~ — एम०एम०एच० कॉलेज,
सूर के पद की व्याख्या — गाजियाबाद

प्रश्न :- सूर के प्रस्तुत पद की व्याख्या करें।

ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
हंस सुता की सुन्दर कगरी, अरु कुंजन की छांहीं॥
वे सुरभी वे बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, नाचत गहि-गहि बांहीं॥
यह मथुरा कंचन की नगरी, मनि-मुक्ताहल जाहीं।
जबहिं सुरति आवत वा सुख की, जिय उमगत
तनु नाहीं॥
अनगन भांति करी बहु लीला जसुदा नंद निबाहीं।
सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, यह कहि-कहि पछिताहीं॥

उत्तर :- प्रस्तुत पद महाकवि सूरदास द्वारा रचित है जो हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कलश से लिया गया है।

प्रसंग — प्रस्तुत पंक्तियों का प्रसंग यह है कि कृष्ण गोकुल से मथुरा चले गये हैं। लम्बे समय तक वे मथुरा में ही रहते हैं और ब्रज की याद वहाँ उन्हें आती रहती है। वहाँ के ~~सारे कार्य~~ महत्वपूर्ण कार्य कलापों एवं दृश्यों को वे भुला नहीं पाते हैं। इनके मित्र उद्धव जब मथुरा पहुँचते हैं तो इनके सामने ब्रज की सारी बातों को वे बोलकर रख देते हैं तथा ब्रज

Your are the only real obstacle in your path to a fulfilling life.

क्रमशः —

25/11/22 × प्र.पत्र

B.Sc. + B.Ed (2) ~~[illegible]~~ प्रकाश्य:

I सेम. हिन्दी व्याकरण

कविता — ब्रजराज — सूर के पद की व्याख्या

ब्रज के प्रति अपनी तड़प और अपने प्रेम को रेखांकित करते हैं।

मूलभाव — प्रस्तुत पद में ब्रजभूमि और गोपियों के प्रति कृष्ण के विरह और प्रेम को दर्शाया गया है।

साधारण अर्थ — प्रस्तुत पद में ब्रजभूमि एवं गोपियों के प्रति कृष्ण के प्रेम एवं विरह को कृष्ण के द्वारा उद्धव के सामने मार्मिक तरीके से दर्शाया गया है। गोकुल से आये हुए अपने मित्र उद्धव से कृष्ण कहते हैं कि हे उद्धव मैं ब्रज को आजतक नहीं भूल पाया हूँ। वहाँ के सुंदर और आकर्षक दृश्यों को भी मैं नहीं भूल पाया हूँ। यमुना का सुंदर किनारा तथा वहाँ फैले हुए लता वितानों के सुंदर दृश्य मुझे आज भी स्मरण रहते हैं। वहाँ के आकर्षक कार्य व्यापार भी मुझे स्मरण रहते हैं। वहाँ गाय तथा बछड़े का दुहना, तथा गोपालों के द्वारा आनंदित मैं बादलों का दर्शन होना, मैं आज भी नहीं भूल पाया हूँ।

बचपन में मैं अपने साथियों के साथ मैं भी कोलाहल करते हुए तरह-तरह का खेल खेला करता था। वो सारे कार्य व्यापार मुझे आज भी स्मरण हैं। यह मथुरा नगरी ~~[illegible]~~ में काफी सम्पन्नता है, यह धन-धान्य से परिपूर्ण है पर यहाँ का वैभव ब्रज की तुलना में मुझको तुच्छ लगता है। ब्रजभूमि मुझे आज भी अपनी ओर खींच रही है।

निष्कर्ष — मथुरा में रहते हुए बहुत तरह की लीला की ... ब्रज की याद ... [illegible] किया।